आपातकाल में सृजन फुलवारी

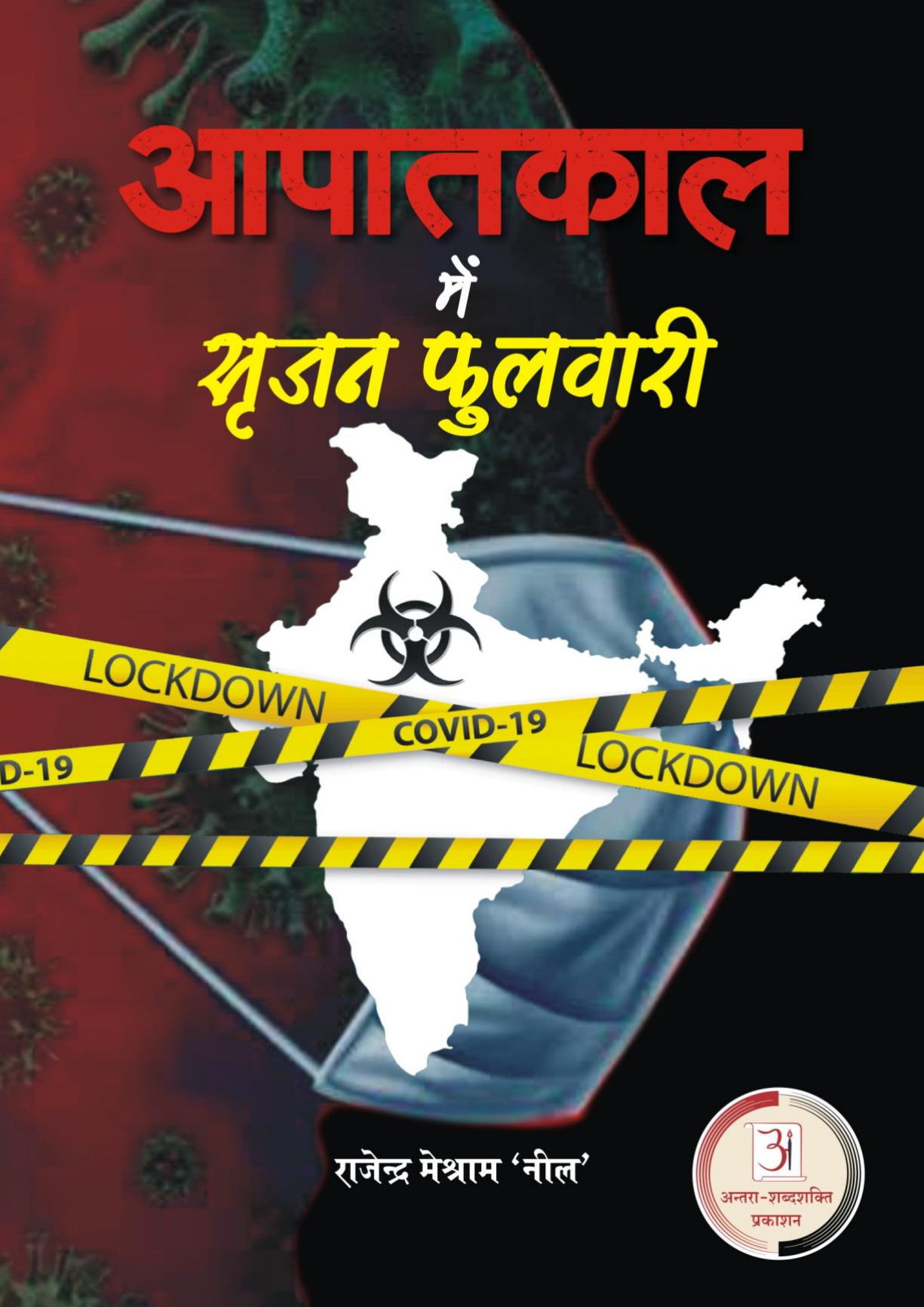

राजेन्द्र मेश्राम 'नील'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

राजेन्द्र मेश्राम 'नील्'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-168-8

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेंल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020 राजेन्द्र मेश्राम

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY RAJENDRE MESHRAM

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेंरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेंशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	मैं सृजनकर्ता हूँ	6
2.	गली झुरमुट वाली	7
3.	कामना अर्पित है	8
4.	हो वीर पुत्र	9
5.	मैं एकलव्य हूँ	10
6.	सतत सजल तू	11
7.	मेरे जीवन साथी	12
8.	नन्हा बीज	13
9.	ये नैन तुम्हारे मतवाले से	14
10.	धरतीपुत्र गतिमान हुआ	15
11.	आगोश में हूँ स्वप्न के	16
12.	मृत्यु का गंतव्य	17
13.	एक अंकुर फूटेगा फिर	18
14.	बूढा बरगद	19
15.	चटकता पेड़	20
16.	कली	21

मैं सृजनकर्ता हूँ

कितनी हो बाधाएं बेशक पथ में मेरे,
मैं सृजनकर्ता हूं रुक सकता नही मैं।

जोर अपना ध्वंस, तू भी आजमा ले,
पर सृजन मेरा तो, नित चलता रहेगा।
यह तपस्या, आस्था की है भयंकर,
कामना का, दीप तो जलता रहेगा।
छल-कपट से, लाख मुझको आजमा ले,
यातनाओं से, तनिक डरता नही मैं।
मैं सृजनकर्ता हूँ, रुक सकता नही मैं।

कितना ही, तूफान आये थामने को,
रोक सकता है नही, क़दमों को मेरे,
कामनाएं, संगिनी बनकर चली है,
फिर कोई, क्या बांध लें यत्नों को मेरे।
है हिमालय से भी ऊंचा प्रण ये मेरा,
है शिखर पर सिर झुका सकता नही मैं।
मैं सृजनकर्ता हूँ रुक सकता नही मैं।

चाहे कितनी, वेदना के शूल बरसें,
लालसा मेरी यहां, सब कुछ सहेगी,
वज्र टूटे या धरा, डोले ये सारी,
प्राण सिंचित, साधना मेरी रहेगी।
मैं अंधेरे को, बदल दूं रोशनी में,
स्वप्न के संग में कभी, चलता नही मैं।

गली झुरमुट वाली

ये आवेग उठ रहे कैसे?
चित्त झिंझोड़ रहे हो जैसे!

इस नीलकुंज मे आ जाओ, कुछ स्वप्न सुनहरे बुनते है,
मन भावों के मोती मिलकर, साथ-साथ मे चुनते है।
बिखेर चुकी है देख शशि, अवनि पर किरणे शीतल,
बाहें खोलकर संचित कर लें, स्नेह भरा अपना आँचल।

गंध वन फूलों की मतवाली,
सुरभित गली झुरमुट वाली।

आ जाओ! हम इस निर्जन वन में, लतंग शिखर पर दीप जलाएं,
अपना तन-मन निखिल करे, मधुर मिलन का पर्व मनाएं।
शायद! उतर रही है रजनी, कुछ बूंदे नभ से टपक रही,
जाग उठी तृण, लहराई लताएं, गहरी नींद जो झपक रही।

आई वन तुलसी पर लाली,
सुरभित गली झुरमुट वाली।

टिमटिमाता दीप कंठ पर, है उन्मन गीत की बातें,
मलयानिल उड़ेल रहा है, स्वर संगम की बरसातें।
आओ! मधुर सा रस निचोड़े, श्वेत-श्वेत से पुष्प यहां,
दमक रहा है "नील" सरोवर, ऐसा मंजर और कहाँ।

तुम मालन मैं हो जाऊं माली,
सुरभित गली झुरमुट वाली।

कामना अर्पित है

हो रही है प्रार्थनाएं, जो व्यथित पर संकल्पित है,
वही कामना अर्पित है।

ज्यों स्नेह उढ़ेल धरा को,
नभ कर देता है स्वर्णिम,
त्यों मुझमे भी संचित कर दो,
प्राची की किरणें अरुणिम।
बिखर चुकी निज प्राणों में, उर चेतना अकल्पित है।
वही कामना अर्पित है।

करूँ कांतिमय निखिल दिशाएं,
स्वर्णचूर्ण हो जाऊं मैं,
कर लूं माटी का आलिंगन
लघु कुंभी हो जाऊं मैं।
उदन्य मिटे, अनुराग बढ़े नित, मम हृदय समर्पित है।
वही कामना अर्पित है।

क्रांति का हो नया उद्भव,
संस्कृति का हो उत्थान यहां,
राष्ट्रधर्म सबल,प्रबल हो,
नई दिशा दे ज्ञान यहां।
स्वच्छंद रहूं उपकार करूं, यही भावना प्रकल्पित है।
वही कामना अर्पित है।

स्वप्न हो साकार यहाँ सब,
विचरण हो उन्मुक्त गगन,
भयरहित जीवनचर्या हो,
सबका जीवन हो मस्त-मगन।
लोभ दर्प का अब शमन हो, हर तृष्णा तृपित है।
वही कामना अर्पित है।

हो वीर पुत्र

तेरे मुख के मुखरित स्वर, और जरा हो अधिक प्रखर।
तूफानों को चीर चलो, हो! वीर पुत्र हे! वीर चलो।

तेरे तन के कंचन कण-कण,
देश हित पर सदा समर्पण,
धरा मांगती है शीश तेरा,
आजादी का बांध ले सेहरा।
मस्त मगन हो डोल रहा है,
विजय पताका बोल रहा है।
है पुण्यपथ हे धीर चलो, हो! वीर पुत्र हे! वीर चलो।

माटी के आलिंगन में जब,
रक्त के कण-कण मिल जाए,
गर्व से उत्तंग शिखर भी,
चरणों मे तेरे गिर जाए।
नभ तुझ पर अब झुका हुआ हो,
समय तनिक क्षण रुक हुआ हो।
बनकर प्रलय समीर चलो, हो! वीर पुत्र हे! वीर चलो।

प्रलय प्रवाह को गतिमान दो,
आसमान को भर दो रज से,
रिपुदल क्षत-विक्षत करो अब,
धरा को रंग दो रक्तिम ध्वज से।
दुनियां को इतना दिखला दो,
नर मुंडो का हार चढ़ा दो।
बनकर अब शमशीर चलो, हो! वीर पुत्र हे! वीर चलो।

मैं एकलव्य हूँ

निष्कंटक घने वनों में, घुमंतू जीवन जीने की कला,
और
विस्मय बोध परखता,
छल कपट के बंध तोड़ता, हाँ मैं एकलव्य हूँ!
मौन से जूझते जंगल,
तेज बहती बेनाम नदी,
और ऊंचे पहाड़ों के शिखरों से कहता,
धैर्य और साहस को जीता, हाँ मैं एकलव्य हूँ!

विस्मृत होते जीवन की,
क्या पहचान सीमित थी?
फिर क्या भेद तुझमे-मुझमें,
क्या भक्ति पर, अनुरक्त था मैं, या शक्ति से विरक्त था मैं,
कुछ सूक्ष्म हूँ, पर बहुत कुछ भव्य हूँ! हाँ मैं एकलव्य हूँ!

रण कौशल कहीं तुझसे,
बेशक बढ़िया था मेरा,
पर वजूद की चुनौती
तुझ पर भारी हो गई,
कहीं धरा पर ना आ जाये,
हवाई वेग से तेरे घोड़े,
बस यही डर था तुझको
इसीलिए तो मांग लिया मुझसे अँगूठा,
पर किंचित नहीं भयभीत हुआ, उर में संकल्पो का सागर ले,
आज भी अडिग खड़ा हूँ, हाँ मैं एकलव्य हूँ!

सतत सजल तू

छनन छनन कर,
झनन झनन कर,
खनकत सुमधुर,
घुँघरू सम्भल तू!

हिलत चलत पग,
थिरक-थिरक कर,
छलकत मदघट,
अगल-बगल तू!

वन-उपवन अरु,
बहकत मधुकर,
ठहरत प्रतिपल,
हृदय पटल तू!

डगर-डगर पथ,
पड़त निश्छल पग,
झनकृत तन-मन,
सतत सजल तू!

मेरे जीवन साथी

मेरे जीवन साथी हर पल साथ-साथ मेरे रहना
भटक जाऊं पथ से मैं तो, हमराही बनकर चलना!
मेरे जीवन साथी, हर पल साथ साथ मेरे रहना.....!

विश्वास कभी हो तीतर बितर, और साथ न दे जब कभी अधर,
रिश्ते नाते अलग -थलग हो, सारे अपने सभी विलग हो!
विश्वास की डोर पकड़ प्रिये, रोम-रोम में तुम रमना!
भटक जाऊं पथ पर मैं तो, हमराही बनकर चलना!

मुश्किलों ने जब घेरा हो, पथ में संकट कोई खड़ा हो,
तन सारा जब थका हुआ हो, और हौसला टूटा हुआ हो!
बुझते दीप की लौ बनो तुम, मनोभाव के संग जलना!
भटक जाऊं पथ पर मैं तो, हमराही बनकर चलना!!

बिखर जाऊं मैं कभी टूटकर, जाऊं जग से कभी छुटकर,
सारे फीके रंग पड़े जब, अपने मे ही रहे अड़े सब!
सब रंगों में मैं रंग जाऊं, ऐसे ही रंग से मुझे रंगना!
भटक जाऊं पथ पर मैं तो, हमराही बनकर चलना!!

भ्रम के अंधड़ मन मे घूमने, अहंकार तन लगे चूमने,
कोमल ह्रदय लगे हो दूषित, तन मन लगे हो कलुषित!
सुरभित पुष्प बनो प्रिये तुम, रोम-रोम में महकना!!
भटक जाऊं पथ पर मैं तो, हमराही बनकर चलना!!

द्वंद भयंकर होने लगे जब, जागी आस्था सोने लगे जब,
जीवन का अंतिम क्षण हो, सारहीन सांसों संग रण हो!
प्रस्थान हो जीवन का अंतिम तो, महाप्रयाण तक तुम चलना!
भटक जाऊं पथ पर मैं तो, हमराही बनकर चलना!!

नन्हा बीज

उजड़ा सा ये निर्जन वन, और पड़ा खंडहर सा मन।
नन्हा बीज का हुआ गमन, करने हेतु कुछ नया सृजन।

मरुभूमि जब सारी धरा हो,
चाहे सुमन बदले कांटो में,
पौध रोपने आशाओं के,
निकल पड़ा हूँ चौघाटों में।
अग्निवर्षा मेघों से हो, या चले शूल सी शीत पवन।
नन्हा बीज का हुआ गमन, करने हेतु कुछ नया सृजन।

अस्तित्व मिटेगा कुछ बदलूँगा,
और माटी में मिल जाऊंगा!
इक दिन तो पावस आएगी,
फिर पल्लव हो खिल जाऊंगा।
व्यापक जग में जड़े बिछा दूँ, हो जाऊं मैं मधुबन।
नन्हा बीज का हुआ गमन, करने हेतु कुछ नया सृजन।

नवऊर्जा मुखरित होगी और,
सिद्ध सभी संकल्पित हो,
ये कोलाहल से भरी वेदना,
केवल यहां विकल्पित हो।
ध्वस्त भयानक विप्लव करदे, विचलित हो सघन चिंतन।
नन्हा बीज का हुआ गमन, करने हेतु कुछ नया सृजन।

ये नैन तुम्हारे मतवाले से

ये नैन तुम्हारे मतवाले से, लगते मद के दो प्याले से।

छूई-मुई के पल्लव जैसे,
लगते है सकुचे-सकुचे से,
गहराई में उतर गए हम,
डूब गए तन-मन समूचे से,
कोई दीपमाला तन पर हो, और बरस गए मेघ काले से,
ये नैन तुम्हारे मतवाले से, लगते मद के दो प्याले से।

झील,कंवल और चंचल झरना,
वीरानों में जैसे संवरना,
ये अनुनय-विनय की परिभाषा है, व्याकुल मन की जिज्ञासा है,
बून्द मोती का कोर पे आता, जब चुपके-चुपके सम्हाले से,
ये नैन तुम्हारे मतवाले से, लगते मद के दो प्याले से।

अनुरोध झलकते इनसे निरंतर,
झरते निर्झर संवाद को तत्पर,
इन आँखों मे सारी वसुधा है,
कि बुझती नही ये प्रेम क्षुधा है,
मकरंद छलकता नित्य-निरंतर, जैसे कोई पनियाले से,
ये नैन तुम्हारे मतवाले से, लगते मद के दो प्याले से।

तीक्ष्ण,कटीले और काली धारी,
समेटे हुए दुनियां को सारी,
उन्मद कोई नभ के बादल,
पलक बने है जैसे आँचल,
तीर कोई हृदय पर चलता, भृकुटी तनी है भाले से,
ये हैं तुम्हारे मतवाले से, लगते मद के दो प्याले से।

धरतीपुत्र गतिमान हुआ

चलता रहा वह अपने पथ, क्षीण हुआ पर थका नही,
बेसुध होकर नित्य निरंतर, तनिक जरा क्षण रुका नही,
कदम-कदम पर कंटक थे, कितने नुकीले पता नहीं।
सृजन नया कुछ करने अब तो, धरती पुत्र गतिमान हुआ।
विदा हुई यह अंधियारी रजनी, उषा का सम्मान हुआ।

मुरझाई सी चंद्रमुखी का, मनोहारी शृंगार हुआ,
भरी जवानी बहती हवा ने, पतझर सारा बहार हुआ,
विरह वेदना दूर हुई और शांत-सुखद संसार हुआ।
सुभग सिंदूर से मांग सजाने, स्वर्णयुक्त दिनमान हुआ।
सृजन नया कुछ करने अब तो, धरती पुत्र गतिमान हुआ।

मधुर मिलन की बातें होगी, हर गुलाब के अधरों पर,
दीपशिखाये ज्योतिर्मय हो, तमस भरे हर डगरों पर,
सुख की लाली फैल रही है, मुरझाये हर चेहरों पर।
बदल रहे है स्वप्न हकीकत, अब पूरा हर अरमान हुआ।
सृजन नया कुछ करने अब तो, धरती पुत्र गतिमान हुआ।

काश्मीर से कन्या तट तक, नवल प्रणयन की शक्ति है,
प्रणय जवानी भरी हुई, क्रान्तिमयी अभिव्यक्ति है,
माटी की गौरव गाथा की, उसमे मगन अनुरक्ति है।
श्रम का पीयूष चमकता मुख पर,माटी का वरदान हुआ।
सृजन नया कुछ करने अब तो, धरती पुत्र गतिमान हुआ।

आगोश में हूँ स्वप्न के

आगोश में हूँ स्वप्न के, ये द्वंद्व निज के बंद है,
काव्य लिखता हूँ कोई, निर्विघ्न कोई छंद है।
आगोश में हूँ स्वप्न के, ये द्वंद्व निज के बंद है।

विचर रही है कल्पना, निश्छल फिरे यहां-वहां,
अचेत सा ये मन हुआ, अनंत सा दिखे जहां!
अर्चित सी रश्मि पूंज है, ये शब्द-शब्द वृंद है।
आगोश में हूँ स्वप्न के, ये द्वंद्व निज के बंद है।

रजत हुई है चंद्रिका, शशि हुई स्वर्ण की,
महलो से भी अतुल लगे, कुटी मेरी ये पर्ण की।
संतृप्त मेरी कामना, और वेदनाएं मंद है।
आगोश में हूँ स्वप्न के, ये द्वंद्व निज के बंद है।

सृजन है राग-रंग का, ये मदभरी बहार है,
मंजुल लगे है हंसिनी, मनोहरी शृंगार है।
अनुरक्त है तृषा ये मन, खुला-खुला पाबंद है।
आगोश में हूँ स्वप्न के, ये द्वंद्व निज के बंद है।

शहनाइयों की गूंज है, रागों से अनुबंध है,
ये प्यास पावनी बनी, ज्ञान कल्पना की गंध है।
उर चेतना विलय हुआ, विचारो का आनंद है।
आगोश में हूँ स्वप्न के, ये द्वंद्व निज के बंद है।

मृत्यु का गंतव्य

है मृत्यु का गंतव्य क्या, ये पथ गमन हो कब कहाँ,
बिखरी पड़ी है साँस की, अनमोल माला अब यहाँ!

भ्रम,भ्रामरी फैला रही,
उद्‌गार सबके मौन हैं,
है नित्य निज से पूछता,
अमरत्व पाया कौन है!
क्षण-क्षण बदलता जा रहा,
अमरत्व का सुत जब वहाँ! है मृत्यु का...

अलसित तरी की डोर सा,
है शून्य पर नभ सा ये मन,
विरक्त सा सुनसान है,
अवरोह से गिरता सा तन!
है एक मुट्‌ठी में लगे,
व्यापक जरा सा तब जहां! है मृत्यु का...

जलते लहू की बूंद से,
ठंडी हवा गलती नही,
अंगार शैय्या पर पड़ी,
जब आत्मा जलती नही!
ये बंध बंधते ही लगे,
तुझको भयानक जब जहां! है मृत्यु का...

एक अंकुर फूटेगा फिर

हे मानव खुद को पहचान, स्वयं सृजनचक्र तू जान
निराश न हो, आशा है यहीं कहीं, एक अंकुर फूटेगा फिर!

कभी न झुकने पाये,
हार के समक्ष अपना ये शीश,
धरती पर चरण रज हो,
सिर्फ और सिर्फ तेरा,
अपना हक लेकर,
अपनी अलग पहचान बना,
रेत के घरौंदे नही,
इरादों के महल बना,
निराश न हो,
आशा है यहीं कहीं,
एक अंकुर फूटेगा फिर!

उथल पुथल भरा मन,
सुख-दुख का अनुभव है,
जन्म-मरण का पहरा है,
मानवता कहीं खो गई,
दिखावे की भीड़ में,
फिर भी जीवन हरा-भरा,
होगा तेरा देख जरा,
निराश न हो,
आशा है यहीं-कहीं,
एक अंकुर फूटेगा फिर!

ईश्वर की अनमोल कृति,
मानव जीवन सार भरा,
प्रेम जगत में फैला दे,
चारो ओर निःस्वार्थ भरा,
ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ को तज,
प्रेम की धारा निश्छल बहा,
प्रकृति का कर सम्मान,
खुद को साबित कर,
निराश न हो,
आशा है यहीं कहीं,
एक अंकुर फूटेगा फिर!

इस अभिशप्त जीवन में
शुभ के पुष्प उगा दे तू,
विश्वास जगा खुद पर,
तो जीवन से प्यार कर,
भरोसा खुद पर हो,
साहस खुद का जगा दे,
मुस्कान, उमंग, आनंद, मस्ती
का खिलता कमल है जीवन,
जीवन के उतार-चढ़ाव,
से लड़ने की कला सीख ले,
निराशा से लड़,
सफलता को आगोश में ले,
एक अंकुर फूटेगा फिर!

भूत को भूल कर,
वर्तमान को जी ले जरा,
भविष्य की चिंता छोड़ दे,
आंदोलित जीवन में,
फिर आनंद ही आंनद,
सफलता
चरण चूमेगी तेरे,
निराश न हो,
आशा है यहीं कहीं,
एक अंकुर फूटेगा फिर!

बूढ़ा बरगद

बरगद के नीचे,
बूढ़े जीर्ण चौपाल पर,
अब नही दिखता कोई आस-पास,
शायद टूट रहे है जर्द पत्ते,
उस पुराने बरगद के,
जैसे टूटकर सिमट रहा हो,
लंबा-चौड़ा बरगद का पेड़!

कोयल की मधुर कुक,
कूंचा गई अब तो,
और ओझल हो गई
सुबह की पीली धूप भी,
आसमान में घुले जहर से,
अछूता नही मेरा गांव!

दादी के किस्से भी,
गुम हो गए कहीं,
और हम भी,
चकाचौंध में खो गये,
दुनियां की भीड़ में
खो आये पुरखो की शान!

अब कहीं दिखती नही,
गोधुल से सनी हुई शाम,
और घर के आगे बच्चों का,
कोलाहल भरा जमघट.....!

चटकता पेड़

जिस पेड़ ने सदियों तक,
केवल शीतल छांव दिया!
फिर क्यों, आज तलाश रहा, वह अपना वजूद!

जब तक हरा-भरा था,
तो भरपूर सुखकारी और लाभकारी था!
समय बीतते ही बस, बन गया चटकता पेड़?

सिर्फ आस लगाए,
मरू भूमि समान रिश्तों पर,
कि काश! हो जाती स्नेह की बारिश,
मान-सम्मान की फुहार।
तो शायद अंकुर फूट सकते है, आज भी!

राह ताकता पलकें बिछाये,
एकटक बस ऋतुएँ निहारता,
कि कोई काला मेघ आसक्त होकर,
बरस जाएं, तो हरा हो जाऊं, मैं चटकता पेड़!

वर्षो तक मीठे मीठे
फल दिए और अडिग खड़े,
रहने की हिम्मत, पर क्या????
इसका फल मिला उसे,
जो अब सिर्फ आश्रित
और,
सिर्फ आश्रित है... यह चटकता पेड़।

कली

कभी पथ पर बिखर जाती,
कभी वो हार हो जाती।

किसी की देह पर चढ़कर,
सुभग शृंगार हो जाती।।

महकती है फिजाओं में,
कली मकरंद सी होकर।

मनोहारी सुमन बनकर,
गुले गुलजार हो जाती।।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

वर्तमान में हमारा भारत देश आपातकाल (शासन द्वारा राष्ट्र पर घोषित तालाबंदी) जैसी संकट की स्थिती से गुजर रहा है। ऐसे में इस देश का हर एक नागरिक अपने ही घर में कैद सा हो गया है! ऐसी स्थिति में प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को असहज महसूस करते हुए खुद को निराश पा रहा है। लेकिन साहित्य के प्रति रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए सृजन-एकाकीपन, निराशा और वेदना को दूर करने का सबसे सफल तरीका है। मन मे उत्पन्न हुई निराशा हम से कुछ भी करने की मनोऊर्जा खींच लेती है।

जब कोई भी सकारात्मक कदम उठाने में मुश्किल पैदा होने लगे,तब क्यों न मानसिक रूप से स्वस्थ होने की प्रक्रिया- पद्य, गद्य से सृजन शुरू करें। और यह निराशा को दूर करने की अच्छी तकनीक भी है! एक सकारात्मक सृजन पुनः ऊर्जित करता है। सृजन- मानसिक आघात के अनुभवों के कारण उत्पन्न विषाद को धीरे-धीरे मिटाकर मन को स्वस्थ करता है।

ऊर्जा केंद्रों के मुक्त प्रवाह में उत्पन्न हुए अवरोधों में से तनाव को दूरकर, सृजन आपको पूरी तरह आनंद, उत्साह और प्रेम से पुनः भर देता है। अन्तरा शब्दशक्ति साहित्य के प्रति एक समर्पित संस्था है जिसने अपने अभिनव सोच से अपने कुशल नेतृत्व एवं रचनात्मक पहल से अपने शहर ही नही, जिले ही नही बल्कि प्रदेश को भी ऋणी कर दिया।

इस आपातकालीन जैसी स्थिति में भी समस्त साहित्यिक गतिविधियों को जारी रखकर हमे अपनी सृजनात्मकता एवं रचनात्मकता से बांधे रखा। इसके लिए अन्तरा शब्दशक्ति का बहुत-बहुत आभार।

रचनाकार

राजेन्द्र मेश्राम 'नील'

मऊ, चांगोटोला, जिला- बालाघाट
मध्यप्रदेश-४८१५५४

Email- rajendrameshram619@gmail.com
Mobile - 9165993335

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-168-8

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/